पद ८५

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म। नाहीं जीवा बंध मोक्ष धर्म।।धु.।। जीव दृश्या अनादि जे म्हणती। तर्क युक्त्या द्वैत स्थापिती। क्रोधें क्षोभोनि वेद शापिती। जन्म जन्मीं मरती घेती जन्म।।१।। नाहीं साधन धन मेळिविलें। संत चरणासी नाहीं आदिरलें। ब्रह्मिशा शरण नाहीं गले। नाहीं शोधीले महावाक्यवर्म।।२।। आम्ही सकलमती अवधूत। द्वैतीं नांदोनियां अद्वैत। विश्वप्रकाश आम्ही विश्वातीत। आम्हां नाहीं विकर्म कर्माकर्म।।३।। पिंड ब्रह्मांड उदंड भेद। नाहीं चैतन्य सत्ता विरोध। सत्य अवधूत मार्ताण्ड बौध। ब्रह्मीं भ्रम हे भ्रमचि पूर्ण ब्रह्म।।४।।